www.thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 64 | अंक 7 | मार्च 2017 | फाल्गुन 2073 | वार्षिक मूल्य 150 रु०

पं० लेखराम आर्यपथिक
6 मार्च 1897 को बलिदान

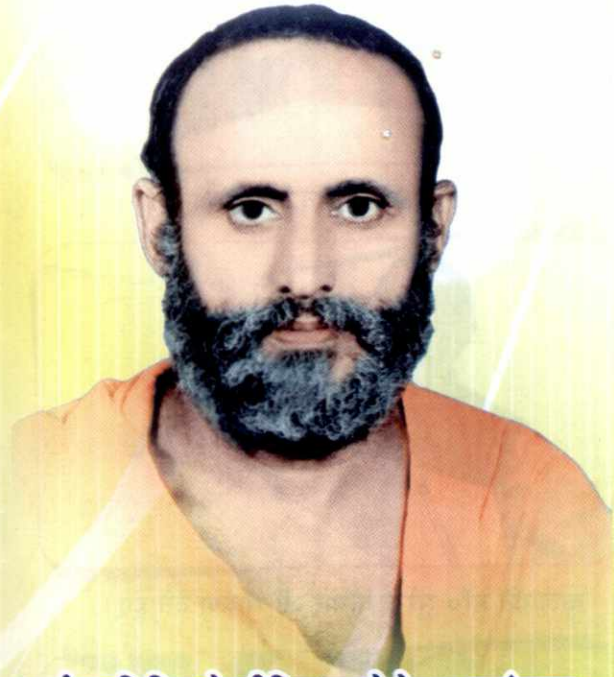

आर्षपाठविधि को जीवित रखने हेतु कृतसंकल्प
स्वामी ओमानन्द सरस्वती
जन्म - 22 मार्च 1911
निधन - 23 मार्च 2003

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

www.thearyasamaj.org

गुरुकुल के 101 वें वार्षिकोत्सव की चित्रमय झलकियाँ

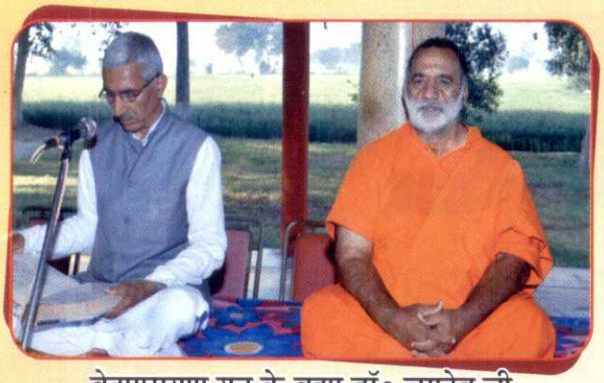

वेदपारायण यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जगदेव जी प्रवचन करते हुए।

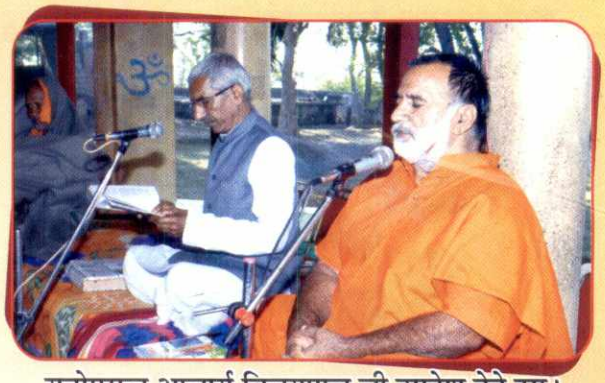

यज्ञोपरान्त आचार्य विजयपाल जी उपदेश देते हुए।

मंच पर आसीन विद्वज्जन।

कुलपति डॉ० योगानन्द शास्त्री भाषण देते हुए।

कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी भाषण देते हुए।

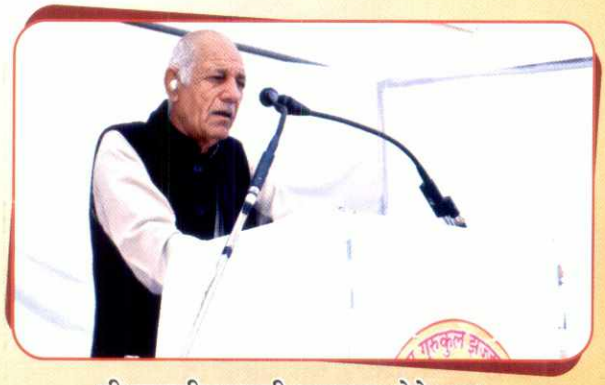

श्री सत्यवीर शास्त्री व्याख्यान देते हुए।

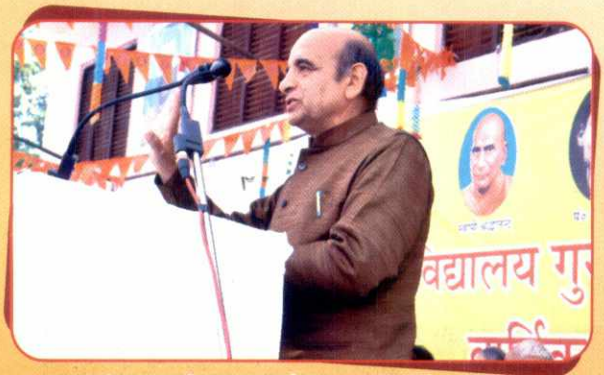

www.thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :६४ अंक : ७
मार्च २०१७ विक्रमाब्द २०७३
दयानन्दाब्द १९३ कलिसंवत् ५११७
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११७

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	आर्याभिविनय	2
2.	सम्पादकीय	3
3.	अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी	4
4.	चिन्ता नहीं चिन्तन करो	8
5.	कृतज्ञता-ज्ञापन	10
6.	मद्य-निषेद्य-शंका और समाधान	12
7.	'कैंसर पहचान कारण बचाव'	16
8.	प्रचारयात्रा विवरण	17
9.	पुस्तक-समीक्षा	19
10.	संस्था समाचार	20
11.	हर्ष सूचना	23

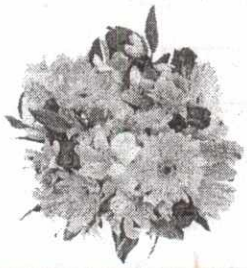

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

www.thearyasamaj.org

आर्याभिविनयः

स्तुति-विषय

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये
साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये।
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।। 5।।

36। 1।।

व्याख्यान- हे करुणाकर परमात्मन्! आपकी कृपा से मैं [(**ऋचं वाचं प्रपद्ये**)] ऋग्वेदादिज्ञानयुक्त=श्रवणयुक्त होके उसका वक्ता होऊं। [(**मनो यजुः प्रपद्ये**)] तथा यजुर्वेदाभिप्रायार्थ सहित सत्यार्थ मननयुक्त मन को प्राप्त होऊं। [(**साम प्राणं०**)] ऐसे ही सामवेदार्थनिश्चय, निदिध्यासन सहित प्राण को सदैव प्राप्त होऊं। (**वागोजः**) वाग्बल, वक्तृत्वबल, मनोविज्ञानबल मुझको आप देवें। अन्तर्यामी की कृपा से मैं यथावत् प्राप्त होऊं। (**सहौजः**) शरीरबल नैरोग्य-दृढ़त्वादिगुणयुक्त को मैं आपके अनुग्रह से सदैव प्राप्त होऊं। [(**मयि प्राणापानौ**)] हे सर्वजगज्जीवनाधार! प्राण=जिससे कि ऊर्ध्व चेष्टा होती है, और अपान=अर्थात् जिससे नीचे की चेष्टा होती है, ये दोनों मेरे शरीर में सब इन्द्रिय, सब धातुओं की शुद्धि करनेवाले, तथा नैरोग्य बल पुष्टि सरलगति करनेवाले, स्थिर आयुवर्धक [और] मर्मरक्षक हों। उनके अनुकूल प्राणादि को प्राप्त होके आपकी कृपा से हे ईश्वर! सदैव सुखी होके आपकी आज्ञा और उपासना में [मैं] तत्पर रहूं।। 5।।

स्तुति-विषय

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता
धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशाना-
स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।। 6।।

32। 10।।

व्याख्यान- [(**स नः**] वह परमेश्वर हमारा (**बन्धुः**) दुःखनाशक और सहायक है। तथा (**जनिता**) सब जगत् तथा हम लोगों का भी पालन करनेवाला पिता, तथा हम लोगों के कामों की सिद्धि का, (**विधाता**) पूर्ण कामों[1] की सिद्धि करनेवाला वही है। सब जगत् का भी विधाता=रचने और धारण करनेवाला एक परमात्मा ही है, अन्य कोई नहीं। (**धामानि वेद भुवनानि विश्वा**) सब धाम अर्थात् अनेक लोक-लोकान्तरों को रचके अनन्त सर्वज्ञता से यथार्थ जानता है। [(**यत्र देवा अमृतमानशानाः**)] वह कौन परमेश्वर है? कि जिससे देव अर्थात् विद्वान् लोग '**विद्वाꣳसो हि देवाः' शतपथ ब्रा०**'[1] अमृत=मरणादिदुःखरहित मोक्षपद में सब दुःखों से छूटके सर्वव्यापिपूर्णानन्दस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होके परमानन्द में सदैव[2] रहते हैं। (**तृतीये धामन्**) एक स्थूल जगत्=पृथिव्यादि, दूसरा सूक्ष्म=आदिकारण, तीसरा जो सर्वदोषरहित अनन्तानन्द-स्वरूप परब्रह्म उस धाम में (**अध्यैरयन्त**) धर्मात्मा विद्वान् लोग स्वछन्द=स्वेच्छा से वर्तते हैं। सब बाधाओं से छूटके विज्ञानवान् शुद्ध होके देश-काल-वस्तु का परिच्छेदरहित सर्वगत 'धामन्'=आधारस्वरूप परमात्मा में सदा रहते हैं। उससे जन्म-मरणादिदुःखसागर में कभी[2] नहीं गिरते।। 6।।

www.thearyasamaj.org

(सम्पादकीय)

स्मृतिशेष स्वामी ओमानन्द सरस्वती

सन् 1942 में मृतप्राय: गुरुकुल झज्जर को प्राणदान देनेवाले, हरयाणाप्रान्त के पुनर्निर्माता! आर्षपाठविधि को जीवित रखने हेतु कृतसंकल्प, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार हेतु अहर्निश भ्रमण करनेवाले यायावर, नवयुवकों को सच्चरित्र की शिक्षा देने वाले, भारत के लुप्त इतिहास को उजागर करने वाले, व्याधिग्रस्त लोगों को पुनर्जीवन देने वाले, सत्साहित्य रचना और प्रकाशन द्वारा जनसामान्य से लेकर विद्वज्जनों को ज्ञानप्रदान करनेवाले, क्रियात्मकरूप से गायों का उद्धार करने वाले, कन्याओं को शिक्षित करने के लिए अपनी सारी पैत्रिक भूमि के प्रदाता, अपने समान त्यागी, तपस्वी ब्रह्मचारी तैयार करने में प्राणार्पण से तत्पर रहने वाले, हरयाणा प्रान्त को शराब और गोहत्या से मुक्त कराने में कृतभूरिश्रम, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा और आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को अलंकृत करने वाले, राष्ट्रपति और हरियाणा के राज्यपाल द्वारा सम्मानित स्वतन्त्रता सेनानी, पंजाबी भाषा की दासता से हरयाणा को मुक्ति दिलाने वाले, विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, प्राच्य मुद्रा परिषद् वाराणसी और केन्द्रीय संस्कृत संगठन के सदस्य पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के 22 मार्च के 105 वें जन्मदिवस तथा 23 मार्च के 14 वें निधन दिवस पर सश्रद्ध स्मरण करते हुए भूरिश: नमन।

स्वामी जी के निधन के उपरान्त उनके शिष्यों का यह कर्त्तव्य बनता है कि उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य जो उनके निधन के कारण अपूर्ण रह गये हैं, उन्हें पूरा करने का संकल्प लेकर उन्हें यथाशीघ्र पूरा करने में पुरुषार्थ करें। जैसे प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करके उस ग्राम के छात्रों को व्यायाम और ब्रह्मचर्य की शिक्षा देकर उन्हें श्रेष्ठ नागरिक बनाना। ग्रामों की पंचायतों के माध्यम से पुस्तकालय खुलवाकर उनके द्वारा ग्राम के शिक्षित लोगों को स्वाध्याय के प्रति जागरूक करना। इसके अभाव में ये लोग ताश खेलने, हुक्का, बीड़ी पीने और सोने में समय नष्ट करते रहते हैं। ग्रामों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार करें तथा लोगों को प्रेरित करें कि अपनी सन्तान को श्रेष्ठ बनाने में अधिक समय दिया करें। जलवायु की शुद्धि हेतु यज्ञ के लाभ बताकर दैनिक साप्ताहिक अथवा पाक्षिक यज्ञ करने की परम्परा डालनी चाहिये। नवयुवक मादक पदार्थों का सेवन करने लग रहे हैं। इसके सेवन से होने वाली हानि का विवरण देकर उन्हें इस कुटेब से बचाने का प्रयास करना चाहिये।

स्कूल कालिज के ग्रीष्मावकाश आदि

www.thearyasamaj.org

के समय व्यायाम प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना चाहिये जिससे देश की भावी पीढी उत्तम आचरणवाली बन सके। लोगों में अपने प्रति आत्मीयता जगाने हेतु औषधप्रदान के द्वारा भी उनकी सेवा करनी चाहिये। धर्मोपदेशक को अन्य विषयों के साथ-साथ आयुर्वेद का भी ज्ञान अवश्य करना चाहिये। जिस रुग्ण व्यक्ति की सेवा आप निस्वार्थभाव से करेंगे, वह जीवनभर आपका कृतज्ञ रहेगा। किसी के जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, पर्व आदि पर उनसे सम्पर्क करके उस दिन उनके परिवार में यज्ञ और सत्संग का आयोजन करने की परम्परा चालू करनी चाहिये। लोग ऐसे अवसरों पर शराब का सेवन करके प्रसन्नता मनाते हैं, उन्हें समझाया जाये कि ऐसे अवसर पर प्रीतिभोज; गोशाला में दान तथा योग्य और निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करें अथवा किसी निर्धन कन्या के विवाह में और अनाथालय आदि में यथासम्भव सहयोग करना चाहिये।

स्वामी ओमानन्दजी की स्मृति में उनके द्वारा अभीष्ट उपर्युक्त कार्यों को क्रियात्मक रूप देने से ही हम उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकेंगे। ऐसा न करके वर्ष में एक बार उनको केवल स्मरण कर लिया जाये, इससे उनकी भावनाओं की पूर्ति नहीं हो पायेगी। आशा है गुरुकुल के स्नातकबन्धु और स्वामीजी के प्रति श्रद्धाभाव रखने वाले सज्जन इस विषय में यथाशक्ति, यथामति तथा सामर्थ्य कुछ न कुछ योगदान अवश्य करेंगे।

-विरजानन्द दैवकरणि

अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी

लेखक-आनन्ददेव शास्त्री पूर्व प्रवक्ता

महर्षि दयानन्द के परम शिष्य तर्क-शिरोमणि पं० लेखराम जी का जन्म पूर्व पंजाब प्रान्त (वर्तमान पाकिस्तान के झेलम) जिले के एक अप्रसिद्ध गांव सैदपुर में एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके दादा महता नारायण सिंह सिक्ख विद्रोह में प्रसिद्ध योद्धा हुये थे। उन्हीं महता के पुत्र महता तारासिंह के घर पं० लेखराम जी का जन्म 8 सौर सम्वत् विक्रमी 1915 शुक्रवार के दिन हुआ।

पं० लेखराम जी बाल्यकाल से ही अत्यन्त भावुक तथा धार्मिक थे। अपने चाचा पं० गेंडाराम को एकादशी का व्रत करते हुये देखकर बालक लेखराम ने नौ वर्ष की आयु में एकादशी का व्रत रखना प्रारम्भ कर दिया था। उनको बाल्यकाल में केवल उर्दू तथा फारसी की ही शिक्षा मिली थी, क्योंकि उस समय उनके प्रान्त में इन्हीं दो भाषाओं के पढने की परिपाटी प्रचलित थी। यह शिक्षा उनके आगे के जीवन में मोहम्मदिया मत के खण्डन में बड़ी काम आई।

पं० लेखराम की उनके चाचा पं० गेंडाराम ने सम्वत् 1932 विक्रमी के पौष मास में पेशावर में पुलिस सार्जेन्ट के पद पर नियुक्ति करा दी। क्योंकि गेंडाराम जी पुलिस में इन्सपेक्टर थे। एक धार्मिक सिक्ख सिपाही के सत्संग से उनकी प्रवृत्ति पूजा-पाठ में पहले ही हो चुकी थी। वे प्रातः

www.thearyasamaj.org

नित्य गीता का पाठ किया करते थे तथा कृष्ण भक्ति में लीन रहते थे। वे जीव-ब्रह्म की एकता तथा ईश्वर में विश्वास रखते थे तथा वैराग्ययुक्त भी थे। 21 वर्ष की अवस्था में उनके माता-पिता ने उनका विवाह करना चाहा परन्तु उन्होंने मना कर दिया। उन दिनों लुधियाना के स्वतन्त्र लेखक कन्हैया अलखधारी की पुस्तक पढने का उन्हें अवसर मिला। उस पुस्तक के पढने से उन्हें महर्षि दयानन्द तथा उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के विषय में जानकारी मिली। तब उन्होंने उक्त ग्रन्थ डाक से मंगाकर पढना प्रारम्भ किया, इससे उनके विचार सर्वथा बदल गये तथा वे कट्टर आर्य बन गये। आर्यसमाजी बनते ही पं० लेखराम ने पेशावर में विक्रमी सं० 1936 में आर्यसमाज की स्थापना कर दी। वे तथा उनके पांच साथी ही वहां की आर्यसमाज थे, शेष सारा इलाका मुसलमानों से परिपूर्ण था। पं० लेखराम को जीव ब्रह्म भी एकता के विषय में कुछ शंकायें अभी बनी हुई ही थीं, अत: उन्होंने स्वयं महर्षि दयानन्द के दर्शन करने का निश्चय किया तथा पुलिस से एक महीने की छुट्टी लेकर 17 मई सन् 1880 ई० को अजमेर पहुंचकर सेठ फतहमल की वाटिका में ठहरे हुए महर्षि दयानन्द के प्रथम तथा अन्तिम दर्शन किये। महर्षि से पं० लेखराम जी ने दस प्रश्न पूछे थे। जिनमें जीव ब्रह्म की एकता का प्रश्न प्रमुख था। पं० लेखराम ने स्वयं लिखा है कि मैंने महर्षि से पूछा कि यदि आकाश तथा ब्रह्म दोनों सर्वव्यापक हैं तो दो सर्वव्यापक एक स्थान पर कैसे रहते हैं? तब महर्षि ने एक पत्थर उठाकर कहा कि जिस प्रकार इस पत्थर में अग्नि, मिट्टी तथा परमात्मा तीनों व्यापक हैं उसी प्रकार ब्रह्माण्ड में आकाश तथा ब्रह्म दोनों व्यापक हैं। सूक्ष्म वस्तु में उससे सूक्ष्म वस्तु व्यापक रहती है। महर्षि के स्वल्प सत्संग से ही पं० जी का विश्वास आर्य समाज में दृढ हो गया। अजमेर से लौटकर उन्हें दिनरात आर्यसमाज के प्रचार की ही लगन रहती थी। पेशावर में उन्होंने धर्मोपदेश पत्रिका निकालनी प्रारम्भ की किन्तु उनका स्थानान्तरण शीघ्र होने पर वह बन्द करनी पड़ी। उनके आर्यसमाजी होने के कारण विधर्मी अधिकारी उनसे द्वेष करने लगे, अत: उनसे तंग आकर पं० जी ने 24 जुलाई 1884 ई० को पुलिस सेवा से त्यागपत्र दे दिया। अब वे पूर्णरूप से आर्यसमाजी बन गये तथा रात दिन विर्धार्मियों द्वारा लिखित आक्षेप पूर्ण पुस्तकों के उत्तर लिखने लगे तथा घूम घूमकर प्रचार भी करने लगे अत: उनका नाम आर्यपथिक प्रसिद्ध हो गया। उनका सबसे अधिक टकराव मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय कादियां जि० गुरदासपुर के प्रवर्तक मिरजा गुलाम कादियानी के साथ रहा। उक्त व्यक्ति ने एक पुस्तक-बुराहीन-ए-अहमदिया-लिखी थी, जिसमें आर्यसमाज पर कटु आरोप थे। पं० जी ने उसके उत्तर में-''तकजीब-बुराहीन-ए-अहमदिया-ग्रन्थ लिखा। फिर मिरजा ने अनुचित आरोपों से परिपूर्ण'' नुस्ख-ए-खब्त-

www.thearyasamaj.org

अहमदिया पुस्तक लिखी। मिरजा ने घोषणा की कि मेरे पास ईश्वर के दूत संदेश लाते हैं तथा मैं चमत्कार भी दिखला सकता हूं। इस बात की जो परीक्षा करना चाहे वह मेरे पास आकर रहे, मैं उसे प्रतिमास 200 रुपये दूंगा। पं० जी उसके घर गये तथा उसे चैलेंज किया किन्तु मिर्जा उन्हें टालता रहा तथा उसकी झूठ की पोल खुल गई।

पं० जी में धर्म के प्रति इतना उत्साह था कि जहां कहीं कोई हिन्दू विधर्मी होने लगता झट वहीं पहुंच जाते तथा उसे बचा लेते। तब मोहम्मदिया दुष्टता पर उतर आये तथा उनको मारने की धमकी देने लगे। पं० जी धार्मिकता तथा भावुकता की प्रतिमूर्ति थे। इस विषय में एक मनोरंजक घटना है-एक बार पं० जी ज्वर से पीडित होकर जालंधर में कन्या महाविद्यालय के संस्थापक ला० देवराज जी के बाग में ठहरे हुये थे, तब वहां महात्मा मुंशीराम जी ने देखा-कि पं० लेखराम जी खाट पर पड़े क्रोध से कांप रहे हैं। पूछने पर पं० जी क्रोध से बोले ला० जी आपका घर आर्य घर नहीं है, मैं अब यहां नहीं ठहरूंगा। तब महात्मा मुंशीराम ने बाग में माली से पूछा तो पता चला कि ब्राह्मण के किसी दुष्ट बालक ने पं० जी को चिढाने के लिये बाग में रक्खे गमलों पर लिखे ओ३म् नाम पर जूते मारे हैं; पं० जी तेज बुखार में भी उसके पीछे भागते रहे तथा न पकड़ पाने पर थककर खाट पर लेट गये। तब पं० जी ने लाला देवराज को कहा कि इसमें आप ही दोषी हैं। आपने गमले ऊंचे स्थान पर क्यों नहीं रखवाये। तब पं० जी बड़ी कठिनाई से शान्त हुये।

पं० लेखराम ने 36 वर्ष की आयु में ज्येष्ठ सम्वत् 1915 में मरी पर्वत अन्तर्गत भन्न गांव की लक्ष्मीदेवी से विवाह किया। सम्वत् 1952 में उन्हें एक पुत्ररत्न प्राप्त हुआ। किन्तु पं० जी अपनी पत्नी को भी उपदेशिका बनाना चाहते थे तथा चाहते थे कि वह भी उनके साथ घूमे। रोज की भाग दौड़ में पुत्र बीमार होगया तथा परलोक सिधार गया। पं० जी पंजाब आर्यप्रतिनिधि सभा से केवल 25 रुपये वेतन के लेते थे। जिससे उनका निर्वाह हो सके।

उन्हीं दिनों पंजाब प्रतिनिधि सभा ने पं० जी को ऋषि जीवन अन्वेषण की जिम्मेदारी दी तब पं० जी ने पूरे देश में घूम घूमकर ऋषि के जीवन की खोज की तथा ऋषि की सबसे प्रामाणिक जीवनी लिखी।

अब पं० लेखराम का धर्म पर बलिदान का समय निकट आ गया था। मोहम्मदिया उनसे पहले ही द्वेष रखते थे। उन्होंने उन पर कई अभियोग, मिरजापुर, इलाहाबाद, लाहौर, मेरठ, दिल्ली, बम्बई में दायर किये हुये थे, जिन सब में पं० जी ससम्मान बरी हुए थे। अब पं० जी को प्रतिदिन मार डालने की धमकियां मिलने लगी किन्तु पं० जी ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की तथा धर्म प्रचार में लगे रहे।

www.thearyasamaj.org

अन्त में फरवरी 1897 ई० के मध्य एक नाटा काला मुसलमान पं० जी के पास हिन्दू बनने के बहाने से आया। पं० जी ने उसे प्रेम से पास बैठाया तथा उसे प्रेम से उपदेश देने लगे। मुसलमान खूंखार था। शुभचिन्तकों ने पं० जी को सावधान भी किया, पं० जी ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

एक दिन सायंकाल जब पं० जी ऋषि जीवनी समाप्त करके उठके अंगड़ाई लेने लगे उस दुष्ट ने पं० जी के पेट में छुरे से कई बार वार किये। जिससे पेट में आठ घाव हो गये। जिनसे आधी रात तक खून निकलता रहा। डा० पेरी (सिविल सर्जन लाहौर) दो घंटे तक घावों को सीते रहे पर पं० जी को नहीं बचाया जा सका। अतः फाल्गुन सुदी 3 विक्रमी सं० 1953 तदनुसार 6 मार्च 1897 ई० रात के दो बजे वे वैदिक धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो गये। उन्होंने मरने से पहले अपने साथियों को कहा था-''मेरे मरने के बाद आर्यसमाज से लेखन कार्य बन्द नहीं होना चाहिये। पं० लेखराम जी की शवयात्रा में 30000 (तीस हजार) लोग रोते बिलखते चल रहे थे। कुलियात आर्य मुसाफिर नाम से उनका ग्रन्थ अति प्रसिद्ध है। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने इसे दो भागों में छापा था। प्रथम भाग गुरुकुल झज्जर से भी छपा है। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने पं० लेखराम जी का जीवनचरित लिखा है, पाठकों को वह अवश्य पढना चाहिये। बलिदानी पं० लेखराम को शतशः प्रणाम।

'सुधारक' के स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म-4 (देखो नियम 8)

1.	प्रकाशन स्थान	-	गुरुकुल झज्जर (झज्जर)
2.	प्रकाशन अवधि क्रम	-	प्रतिमास
3.	मुद्रक का नाम	-	वेदव्रत शास्त्री
	राष्ट्रीयता	-	भारतीय
	पता	-	आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	-	आचार्य विजयपाल
	राष्ट्रीयता	-	भारतीय
	पता	-	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (झज्जर)
5.	प्रधान सम्पादक का नाम	-	आचार्य विजयपाल,
6.	सम्पादक का नाम	-	विरजानन्द दैवकरणि
	राष्ट्रीयता	-	दोनों भारतीय
	पता	-	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (झज्जर)
7.	उन शेयर होल्डरों के नाम और पते जिनके पास कुल पूंजी के लिए एक प्रतिशत से अधिक शेयर हैं।	-	प्रकाशन आदि का सम्पूर्ण व्यय गुरुकुल झज्जर करता है अन्य कोई हिस्सेदार नही।

मैं आचार्य विजयपाल घोषित करता हूँ कि ऊपर दिया हुआ विवरण सत्य है।

-प्रकाशक के हस्ताक्षर

आचार्य विजयपाल

www.thearyasamaj.org

चिन्ता नहीं चिन्तन करो

चिन्ता चिता से भी बड़ी चिन्ता नहीं चिन्तन करो।
देगा न दुख फिर दुख तुम्हें दुख का भी अभिनन्दन करो।।
छोड़ो दिखावा व्यर्थ का नित साथ दो असमर्थ का;
जिससे भला हो अर्थ का ऐसा भजन-पूजन करो।।
निस्वार्थ जीवन जो जिए अमृत-सरोवर वो पिए;
हठ छोड़ दो रघु के लिए खुद को ही रघुनन्दन करो।।
रोना रुलायेगा तुम्हें भूखा सुलायेगा तुम्हें;
पल-पल नचायेगा तुम्हें मत व्यर्थ का क्रन्दन करो।।
पुतले बनो मत स्वार्थ के तू गीत गा परमार्थ के;
भ्रम तोड़ दे मन पार्थ के सत्यार्थ का सिंचन करो।।
संग्राम कर सच जोड़कर जी ज़िन्दगी छल छोड़कर;
मोहन मिलेंगे दौड़कर तन-मन को वृन्दावन करो।।
ज्यादा दिखें हैं कम बहुत झूठे बड़े हैं हम बहुत;
घुटने लगा है दम बहुत ढीले सभी बन्धन करो।।
फैली धरा पर गन्दगी मुश्किल है कटनी जिन्दगी;
कैसे करें हम बन्दगी खुशबू का संवर्धन करो।।
राहें बड़ी मंज़िल बड़ी पैरों में बेड़ी भी पड़ी;
कैसे करेंगी हथकड़ी अब दूर यह उलझन करो।।
जो भी सुने छल छोड़ दे टेढ़ी कलें सब तोड़ दे;
नाता परम से जोड़ दे मोहन यूँ सम्मोहन करो।।
बसते-बसाते ही चलो झुकते-झुकाते ही चलो;
हँसते-हँसाते ही चलो सद्भावना दुलहन करो।।
बूढ़ा जवानी पा सके प्रियतम निशानी पा सके;
अपनी कहानी पा सके ऐसा सधा लेखन करो।।
शादी हो अथवा हो गमी लो सोख आँखों की नमी;
रह जाय ना कोई कमी चहुँ ओर अवलोकन करो।।
चलती रहेंगी उलझनें सजती रहेंगी दुलहनें;

www.thearyasamaj.org

जाने रुकें कब धड़कनें हर साँस से सिमरन करो।।
विध्वंस शुभ गहना नहीं क्यों मानता कहना नहीं;
यह तन सदा रहना नहीं मन में यही मन्थन करो।।
सम्मान दो सम्मान लो मत मौत का सामान लो;
अच्छी लगे तो मानलो खुद को न दुर्योधन करो।।
पाखण्ड में तू क्यों ढला माँ-बाप से लड़कर चला;
दर-दर भटकता क्यों भला घर में ही प्रभु-दर्शन करो।।
जो भी कला घोंटे गला रख दूर का रिश्ता भला;
पापों की तोड़े अर्गला ऐसा मनोरंजन करो।।
सन्तोष में कल्याण है लोभी पड़ा म्रियमाण है;
संस्कृति हमारा प्राण है भारत को मत लन्दन करो।।
क्रम है यही संसार का जीवन है दिन दो-चार का;
फिर काम क्या तलवार का हर धूल को चन्दन करो।।
जगदीश से कर याचना मत दो किसी को यातना;
मन को 'मनीषी' लो बना तन को सदा नन्दन करो।।
पिंजरे में जब सोना पड़े चाकर तलक होना पड़े;
फिर बाद में रोना पड़े ऐसा न गठबन्धन करो।।
फल की न इच्छा कर कभी, कट जायँगी उलझन अभी;
निष्काम करता चल सभी सच का न उल्लंघन करो।।
कुटिया भले प्रासाद हो मन में नहीं अवसाद हो;
प्रभु -प्रेम रूप प्रसाद हो इस भाव से भोजन करो।।
गोपाल के इस देश में, शिशुपाल के परिवेश में;
मन-कंस के नित क्लेश में अपने को यदुनन्दन करो।।
गीता पढ़ो-गीता सुनो गीता बुनो गीता गुनो;
शुभ कर्म के पथ को चुनो निज लक्ष्य का भेदन करो।।

डा० सारस्वत मोहन मनीषी
आर्यकवि, रोहिणी (दिल्ली)

www.thearyasamaj.org

कृतज्ञता-ज्ञापन

मेजर रतनसिंह यादव

1. मनुष्य में पाये जाने वाले गुणों में कृतज्ञता-ज्ञापन का बहुत बड़ा महत्त्व है। वास्तव में कृतज्ञता-ज्ञापन अनिवार्य है। सर्वप्रथम हम अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें जन्म देकर, बहुत प्यार से पालपोसकर बड़ा किया। हमारी छोटी से लेकर बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति की। जब हम बच्चे थे तो बिमार होने पर माँ ने जाग जाग कर रातें बिताईं। आप भूखी रहकर अपने बच्चे को माँ ही पाल सकती है। आप गीले में सोती थी और हमें सूखे में सुलाती थी। माँ का कर्ज कोई अपने चमड़े की जूती पहनाकर भी नहीं उतार सकता। पिता ने भी हमें समर्थ और जवान होने तक सब कुछ ध्यान रखकर हमें योग्य बनाया। हमारे मन में माता-पिता के प्रति कृतज्ञता का भाव सदैव सर्वोच्च रहना चाहिए।

2. हम धरती माता पर निवास करते हैं, इसकी वायु में श्वास लेते हैं, भोजन प्राप्त करते हैं, यह धरती माता, प्रकृति हमें सब कुछ निःशुल्क प्रदान करती है। पेड़ पौधे हमें जीवन प्रदान करने वाली प्राणवायु (आक्सीजन) मुफ्त में देते हैं। बदले में हम उनकी रक्षा करें, पालें पोसें, जल से सींचे। पेड़ लगाना भी एक यज्ञ है। हम प्रतिदिन अपने शरीर से अनेक प्रकार के मल त्याग कर प्रकृति की झोली में डालते हैं। यह कर्ज हमें चुकाना है। नहीं तो आगे आने वाली हमारी सन्तानें जीने योग्य नहीं रह पायेंगी।

3. हमें भगवान् और अपने पूर्वजों ने ऋषिमुनियों ने जीवन जीने की कला सिखाने के लिए ज्ञान का अपूर्व भण्डार वेद, शास्त्र, उपनिषद्, रामायण, महाभारत के रूप में हमारे लिए छोड़ा है। उन जीवन मूल्यों पर आचरण करके यह समस्त पृथ्वीमण्डल सुखी रह सकता है। हम उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करें कि उन्होंने कितने अमूल्य रत्न हमें निःशुल्क प्रदान किये।

हमारे शास्त्रों में पँच महायज्ञों का विधान है। जिनमें सन्ध्या, अग्निहोत्र, अतिथि सेवा, असहाय पशु पक्षियों को अन्न जल प्रदान करना आदि सम्मिलित हैं। कहने को तो हम अपने को शिक्षित मानते हैं, परन्तु आज से कुछ वर्ष पहले की हमारी पीढी के अनपढ़ लोगों में जो उत्तम संस्कार थे, वे धीरे धीरे सब समाप्त होते जा रहे हैं। हमें स्मरण है कि जब अपने गाँवों में बिजली आदि के साधन नहीं थे, अन्न उत्पादन भी आवश्यकता से कम होता था, जल का भी आज की अपेक्षा अभाव था उन दिनों हमारी माताएँ घर में अन्न की कमी होते हुए भी पक्षियों के लिए घर की छत पर दाना डालती थी। पुरुष घर से कोस भर दूर सिर पर पानी का घड़ा रख खेतों में पेड़ के नीचे घड़ों के टूटे ठीकरों में प्रतिदिन पक्षियों के लिए पानी डालकर आते थे। उनके चारों ओर बाड़ लगायी जाती थी ताकि आवारा पशु, पक्षियों के जलवाले पात्रों को फोड़ न डालें। आज ये सब कहाँ है?

www.thearyasamaj.org

पेड़ों तथा जल के महत्त्व को हमारे अग्रज पूर्वज हम पढे लिखों से कही ज्यादा समझते थे। प्रत्येक गाँव के बाहर स्थित जोहड़ के किनारे पीपल के पेड़ लगाने के लिए कितना प्रयास करते थे। पीपल के छोटे पौधे के चारों ओर 5-6 फुट जगह छोड़कर गहरी खाई खोदी जाती थी। उससे दोहरा लाभ था। पहला तो यह कि कोई ऊँट आदि पशु उसे खा न ले तथा दूसरा वर्षा के दिनों में उस खाई में भरा जल छोटे पौधे के लिए कई दिनों तक पर्याप्त रहता था। इसके पश्चात् खाई के बाहर रक्षा के लिए बाड़ भी लगायी जाती थी।

महिलाएँ जोहड़ के आसपास लगे पुराने पीपल के पेड़ों पर रहने वाले मोरों तथा अन्य पक्षियों के लिए दाना डालने आती थी तो वापिस लौटते हुए जोहड़ से अपनी झोली में 10-5 सेर मिट्टी उठाकर दूर डालना न भूलती थी ताकि जोहड़ थोड़ा और गहरा बना रहे तो पानी अधिक दिन तक टिकेगा। आज निर्दयतापूर्वक पेड़ों को नष्ट करने वाली तथा जल को बर्बाद करने वाली हमारी पीढ़ी इससे कुछ सीखेगी ऐसा लगता तो नहीं। आज जोहड़ों को गाँव की गन्दगी भरने के लिए प्रयोग में लाया जाता है अथवा उनमें मिट्टी भरकर वोट के लोभी नेताओं ने गाँव में जितनी जातियों के लोग बसते हैं उन सबकी अलग अलग चौपालें बना दी हैं। कहने को तो सरकार जाति प्रथा समाप्त करना चाहती है पर अपने कर्मों से लोगों को अलग अलग कर रही है। पहले जब ये सरकारी जाति वाली चौपालें नहीं थी तो सभी जाति के लोग गाँव के मध्य स्थित स्थान पर एकत्रित होकर निर्णय कर लेते थे, ऐसे स्थान को परस कहा जाता था।

इस धरती माता का निर्माण प्रभु ने सभी जीवों के लिए किया है। सभी जीवों का सह-अस्तित्व होना सर्वहितकारी है परन्तु आज की दानवी सभ्यता ने सबका हक छीन लिया। आज हमारे बच्चे हिरण, गीदड़, खरगोश, लोमड़ी, चिड़ियाएं, गिद्ध, बाज, कौवे आदि के केवल पुस्तकों में चित्र में ही देखते हैं। तेजी से बढते शहरीकरण तथा गाँवों को शहरों में बदलने की तेज रफ्तार तो मानो बचाखुचा सब निगल जाना चाहती है। ऐसे विकास में ही विनाश के बीज छिपे हैं। यों ही चलता रहा तो यह धरती माता रहने योग्य नहीं रह जायेगी। मनुष्य जाति अपने हाथों अपनी कब्र खोद रही है। यह दानवी विकास के नाम वाली दौड़ ही हमारा गला घोट डालेगी। इस विकास की अन्धी दौड़ ने मनुष्य को आलसी, सुविधाभोगी, परावलम्बी, ईष्यालु, अपराधी, भ्रष्टाचारी, चोर, रिश्वतखोर, हत्यारा तथा शोषक बना दिया है और बनाती ही जा रही है।

इसलिये हमें प्रकृति के साथ खिलवाड़ न करके उसका सही उपयोग करना चाहिये। विकास के नाम पर प्राकृतिक पदार्थों को नष्ट करना अनेक प्राकृतिक आपत्तियों को निमन्त्रण देना है। अत: नैसर्गिक रूप से खान-पान, रहन-सहन करने से ही हम स्वस्थ तथा दीर्घायु हो सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

मद्य-निषेध-शंका और समाधान

श्री मोरार जी देसाई पूर्व प्रधानमनत्री भारत सरकार

प्रश्नः मद्य-निषेध को देश के लिए आप इतना आवश्यक क्यों मानते हैं ?

उत्तरः यह देश गरीबों का देश है। गरीबों की हालत सुधारनी है तो मद्यनिषेध के बिना काम नहीं चलेगा। शराब अनेक संस्कृतियों और बड़े-बड़े देशों के नाश का कारण बनी है। हमें ठीक तरीके से जीना है और अपनी संस्कृति तथा सभ्यता को बनाये रखना है तो शराब को छोड़ देना होगा। ज्यादातर हिन्दुस्तानी नशाबन्दी के पक्ष में हैं, बहुत बड़ी आबादी-अस्सी प्रतिशत से ज्यादा-इस बात को पसन्द करती है, इसमें मुझे कोई शक नहीं है।

भारत की संस्कृति में शराब पीना असभ्यता की और शर्म की बात मानी जाती है, सदा मानी जाती रही है। आज यह ख्याल कुछ लोगों के दिलों से हट गया है। अब वे इसमें शर्म नहीं मानते। इससे नुकसानदेह वस्तु दूसरी नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान में फिर से यह शर्म पैदा हो जाए, ऐसी हालत हमें पैदा करनी चाहिए। यह मैं मानता हूं। जिन लोगों ने नशाखोरी के नतीजे देखे हैं, वे तो कभी इसके पक्ष में कोई बात नहीं कर सकते। मैंने तो बचपन से ही यह सब देखा है। शराब से जिन सभी पक्ष वर्ग के लोगों के परिवारों को मैंने नष्ट होते देखा है, उन लोगों की बात क्या कहूं? यह कहने लायक नहीं है। 1914-15 की बात करता हूं आज की नहीं।

उस वक्त वे लोग कहते थे कि जब तक शराब की यह दुकानें हैं, हम बच नहीं सकते। रात होती है और हम पी लेते हैं। हमारे शरीर का ऐसा हाल हो गया है कि लगता है मानो इसे पिए बिना हम जी नहीं सकते। सुबह उठते ही अपने आप पर हमको क्रोध आता है और घबराहट होती है। हम जानते हैं हमें क्या करना चाहिए, मगर फिर शाम होते ही हम वैसी ही लाचारी महसूस करने लगते हैं। मेहरबानी करके ये दुकानें हटाइए, तभी हमारी हालत सुधरेगी, नहीं तो नहीं। आज भी वे लोग उनमें से ज्यादातर लोग, यही कहते हैं। भला सोचिए तो सही, जिन गरीबों को दिन भर मेहनत करके एक रुपया मजदूरी मिलती है, वह शाम को उसे शराबखोरी में खर्च कर दें तो उनका और उनके बाल-बच्चों का क्या होगा? वे क्या खायेंगे-पहनेंगे? शराबखोरी के लिए दुकानें खुली रहीं तो शराबखोरी समाज में बढ़ती जाएगी। इसलिए यदि हमें इस देश में समृद्धि पैदा करनी है, गरीबों को हालत सुधारनी है, गरीबों को फायदा पहुंचाना है, तो मैं मानता हूं कि नशाबन्दी एक बुनियादी बात है। मुझे इसमें शक नहीं है कि अपने विकास के लिए नशाबन्दी करनी है, क्योंकि जितनी देर होती है, उतनी ही ज्यादा कठिनाइयां इस काम में पैदा हो जायेंगी।

प्रश्नः मद्य-निषेध ऊपर के तबके लिए भी होना चाहिए या सिर्फ गरीबों के लिए ?

www.thearyasamaj.org

उत्तर: ऊपर के तबके के लिए भी होना चाहिए। समाज में एक तबके को कोई बुराई करने की छूट दी जाए और दूसरे को नहीं, यह लोकतंत्र में नहीं हो सकता। ऊपर के तबके वालों के लिए मद्यपान यद्यपि उतना नुकसानदेह न भी समझा जाये तो भी दूसरों के फायदे के ध्यान से उन्हें इस आदत को छोड़ देना चाहिए। यह उनका कर्त्तव्य है कि वे समाज की भलाई का ध्यान रखें। गरीब लोग इस आदत में फंसकर मरते हैं, उनके भले के लिए बड़ों को शराब छोड़ देनी चाहिए। समाजवादी समाज-रचना का मतलब क्या है ? गरीबों को ऊपर उठाने के लिए अमीरों द्वारा त्याग और सेवा।

प्रश्न: मद्य-निषेध के विषय में राजस्व की हानि होने की जो दलील दी जाती है, उस पर आपका क्या विचार है ?

उत्तर: लोगों का स्वास्थ्य खराब करके, जल्दी बुद्धि बिगाड़ कर उनके पास से पैसा लेना राज्य के लिए कहां तक मुनासिब है, यह बात सबको सोचनी चाहिए। यह बात भी गलत है कि नशाबन्दी से राज्य की आमदनी हमेशा के लिए कम हो जाती है, राजस्व का नुकसान हो जाता है। जो पहले बम्बई राज्य था, और अब जो महाराष्ट्र और गुजरात राज्य हैं, उसका मुझे अनुभव है। आप वहां की आर्थिक स्थिति देख लीजिए। उस राज्य में 1950 में नशाबन्दी हुई और उसके बाद से राज्य की आर्थिक स्थिति पहले से ज्यादा अच्छी हुई, मजबूत बनी, वह कमजोर नहीं हुई। यानि, पहले वहां शराब से जितना रुपया मिलता था उससे कहीं अधिक सेल्स टैक्स से मिलता है। बात बिल्कुल साफ है कि यदि शराब से राज्य को एक करोड़ रुपया मिलता है तो पीने वालों का तो उसमें चार या पांच करोड़ रुपया चला जाता है और इसी तरह, अगर राज्य का दस करोड़ रुपया घटता है, तो लोगों के पचास करोड़ रुपये लोगों के पास ही उनकी जेबों में बच जाते हैं। और फिर यह पचास करोड़ रुपया लोग जरूर अपने दूसरे कामों में लगा सकते हैं और उन कामों से राज्य को खासा पैसा मिल सकता है। इस तरह उनको भी फायदा हो सकता है और राज्य को भी। यह मेरा अनुभव महाराष्ट्र का और गुजरात का रहा, मद्रास में भी यही अनुभव किया होगा, इसमें मुझे शक नहीं। इसलिए राज्य के नुकसान की बात में कोई दम नहीं है।

अगर यह मान भी लें कि राजस्व का नुकसान होता है तो फिर भी जिस काम से इन्सान को नुकसान पहुंचता है वह काम हमें छोड़ना ही चाहिए और पैसा छोड़ना पड़े छोडना ही चाहिए, नहीं तो इंसान का ठीक विकास कभी नहीं होने पाएगा। जहां तक इंसानियत का सवाल है और जहां मनुष्य के सही स्वार्थ और सुख की बात सामने है, वहां पैसे का हिसाब लगाने से इन्सान खत्म हो जाएगा। इसलिए जो पैसे की दलील देते हैं वे सिर्फ लालची लोगों को लुभाने की ही दृष्टि से देते हैं। असली बात यह नहीं है। असली बातें दो हैं। जो लोग नशाखोरी में पड़े हुए हैं या

www.thearyasamaj.org

जिन्हें इसकी आदत है, यदि वे नशा न करने पायें, यदि उन्हें शराब न मिले तो उनको बड़ा कष्ट महसूस होता है। शराब बराबर मिलती रहे इसलिए वे अनेक दलीलें पेश करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शराब नहीं पीते किन्तु नशाबन्दी में विश्वास नहीं रखते। वे नशाबन्दी न करने को कहते हैं। इस तरह से वे भी नशाखोरी को प्रोत्साहन देते हैं। कुछ पैसे वाले लोग हैं जो ऐसा समझते हैं कि नशाबन्दी से होने वाला घाटा ज्यादा टैक्स (कर) द्वारा उन्हें पूरा करना पड़ता है। वे समझते हैं, नशाबन्दी होगी तो उन्हें टैक्स देना पड़ेगा, और इसलिए वे इसका विरोध करते हैं, किन्तु यह उनकी बड़ी भारी भूल है। शराब खुली रहने से उन पर टैक्स कभी कम नहीं पड़ेगा बल्कि ज्यादा ही पड़ेगा, क्योंकि जो नशाखोर हैं उनकी शारीरिक और मानसिक क्षति से समाज को हानि पहुंचेगी उनकी पूर्ति के लिए राज्य को और रुपया खर्च करना पड़ेगा। यह खर्च उन्हीं पर पड़ेगा, जिनके पास ज्यादा पैसा है। इसलिए, ऐसी दलीलें देना निरर्थक है।

प्रश्नः क्या आप यह जानते हैं कि मद्य-निषेध के लिए कानून इतना कारगर नहीं हो सकता जितना शिक्षा और प्रचार द्वारा लोकमत तैयार करना ? क्या आप इन दोनों में समन्वय की राय भी देते हैं ?

उत्तरः दुनियां में शराबखोरी के विरुद्ध शिक्षा और प्रचार तो चल ही रहा है, लेकिन कानून बनाए बगैर सफलता नहीं मिलती। दोनों का समन्वय होना ही चाहिए। यानि कानून भी और शिक्षा और प्रचार साथ-साथ चलते रहें। इसके साथ-साथ रहने पर भी कानून रहने से फायदा है। जो बुराई गैर-कानूनी घोषित कर दी जाती है वह उतनी नहीं फैलती। वेश्यावृत्ति, जुआखोरी कानून बना देने पर भी यह सब बुराइयां समाज में हैं, पर इसका यह मतलब नहीं कि कानून न बनाया जाए। कानून न होता तो यह बुराइयाँ अधिक होतीं। इसलिए किसी भी बुराई को कम करने के लिए कानून जरूरी है। आखिर राज्य भी क्यों चाहिये ? अगर कुछ करना ही नहीं है तो राज्य की भी क्या जरूरत है ? लोग मनमानी किया करें तो समाज चल नहीं सकता। लोगों को मनमानी करने से रोकने के लिए और समाज व्यवस्था बनाये रखने के लिए सरकार की जरूरत होती है। समाज में जो अनिष्टतत्त्व हैं, उन्हें रोकने के लिए और सुधारने के लिए सरकार की जरूरत है। इसलिए समाज ने सरकार को सत्ता दी है। रेलगाड़ी में कई लोग बिना टिकिट यात्रा करते हैं। हम उनको पकड़ते हैं और मुकदमे चलाये जाते हैं, इनकी संख्या सैंकड़ों में होती है, मगर कोई नहीं कहता कि जब कानून के बावजूद सैंकड़ों लोग बिना टिकट यात्रा करते ही हैं तो यह कानून हटा लेना चाहिये और सबको बिना टिकट आने-जाने की आम परवानगी दे दी जानी चाहिये। चोरी और खून वगैरा के खिलाफ कई सदियों से कानून है। दुनियां जानती है तभी से राज्य बना, तभी से ऐसे कानून हैं, तब से आज तक चोरी का

www.thearyasamaj.org

अपराध घटा नहीं है, बढ़ा ही है। आज तो खून भी अधिक होने लगे हैं, ऐसा हम कहते हैं, तब फिर क्या पीनल कोड का खत्म करने की बात उठाई जानी चाहिये ? सबको मनमानी करने की छूट का परवाना दे दिया जाय ? यह ऐसा विचार है जो किसी के भी मन में नहीं आता। हिन्दुस्तान में पहले दारू की दुकान न होती थी। शराब पहले इस तरह खुले आम नहीं बेची जाती थी। यह तो अंग्रेजों की हुकूमत के बाद यहां शुरू हुई। हम और कुछ नहीं, इतना ही कहना चाहते हैं कि इसकी कोई ऐसी दुकान न हो। लोगों को जरूर समझाया जाना चाहिए, बचपन से ही समझाना चाहिये, स्कूलों में भी इसके बारे में शिक्षा मिलनी चाहिए। यह सब तो ठीक है मगर, कानून न होगा तो नशाबन्दी बनेगी नहीं।

जो लोग कहते हैं कि मद्य-निषेध सफल नहीं हुआ वे हकीकत नहीं जानते। यदि ऐसा जान पड़े कि नशाबन्दी के कानूनों के अमल में खामियां हैं तो उन्हें दूर करने की कोशिश की जानी चाहिये। किसी भी सिद्धान्त की इस आधार पर निन्दा बेकार है कि उसे हम व्यावहारिक रूप प्रदान करने में असमर्थ रहे हैं। नशाबन्दी सम्बन्धी नीति का भी इस आधार पर परित्याग नहीं किया जा सकता कि गैर-कानूनी शराब का निर्माण करनेवाले और चोरी से उसे बेचनेवाले लोग देश में मौजूद हैं। इसका इलाज तो यह होगा कि कानून पर अधिक ईमानदारी और तत्परत्ता से अमल किया जाय। जहां तक नशाबन्दी कानून को लागू करने का सम्बन्ध है मैं यह बात कह सकता हूं उसे उतना ही सफलतापूर्वक लागू करना सम्भव है, जितना कि दण्ड विधान सम्बन्धी अन्य कानूनों को। कोई व्यक्ति यह दलील पेश नहीं करता कि चूंकि अपराधों की संख्या समय-समय पर बढ़ती रहती है तथा उन्हें कभी समाप्त नहीं किया जा सकता, इसलिए दण्ड-विधान-सम्बन्धी समस्त कानूनों को समाप्त अथवा रद्द कर दिया जाना चाहिये। यदि कुछ मांग की जाती है तो सिर्फ इतनी की अपराधों को रोक-थाम और उससे सम्बन्धित दण्ड विधान को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक साधन खोजे जाएं। नशाबन्दी को लागू करने के सम्बन्ध में भी समस्त विचारशील लोगों को इस प्रकार की नीति अपनानी चाहिये। जिसके सिवा, ऐसा तो कुछ भी नहीं है जिसे पूरी सफलता के साथ अंजाम दिया जा सके। किसी बुराई को समाज में यथासम्भव कम ही रखना हमारा कर्त्तव्य है। कोई बुराई बिल्कुल चली जायेगी, इसे मैं नहीं मान सकता। कमरे को साफ रखने के बाद भी कमरे में कुछ न कुछ मैल रह जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि कमरे को साफ ही न किया जाये या नहाना बन्द कर दिया जाये, तो शरीर की क्या हालत होगी, हम इसकी कल्पना कर सकते हैं। अनादिकाल से मसाज में बुराई और भलाई दोनों रही हैं। हमारे समाज का कर्त्तव्य है कि बुराई को कम करते जाएं और भलाई को प्रोत्साहित करते जाएं। यह हमारी सरकार का और समाज का काम है।

www.thearyasamaj.org

प्रश्नः आपकी राय में मद्य-निषेध केन्द्र का विषय होना चाहिये या राज्यों का ?

उत्तरः सारे विषय केन्द्र के हों, यह कैसे हो सकता है ? और आज तो केन्द्र ही इसकी सबसे ज्यादा उपेक्षा कर रहा है।

प्रश्नः मद्य-निषेध की तरह क्या अन्य नशों को रोक-थाम पर भी आप उतना जोर देते हैं ?

उत्तरः सभी तरह की नशीली चीजों को बन्द किया जाना चाहिये। बम्बई में सभी नशीली चीजों पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। अफीम, चरस, गांजा आदि नशीली चीजों पर प्रतिबन्ध है, लेकिन इन चीजों को जारी करने के लिए कोई नहीं कहता। शराब पीनेवालों की संख्या ज्यादा है, इसलिये इस बारें में कहा जाता है, कुछ मिनिस्टरों तक में यह बुराई घर कर गई है। अगर नशाबन्दी अभी सफल नहीं तो फिर 20 साल बाद हिन्दुस्तान में नशाबन्दी नहीं हो सकेगी। क्योंकि तब शराब पीना इतनी आम बात हो जायेगी कि इस पर रोक लगाना सम्भव नहीं होगा। मेरा विश्वास है कि आखिरकार भले तत्त्व सफल होते हैं। सत्य बोलने वाले आज समाज में कितने हैं ? करोड़ों में एक। लेकिन कोई नहीं कहता कि सत्य बुरा है, और इसी कारण सत्य जिन्दा है। इस संदर्भ में एक और बात है नशाबन्दी के बारे में सिर्फ एक ही आदमी आग्रह करता जाए तो कोई बात नहीं बनेगी। मैं इसके बारे में कहता रहूं इससे कोई फायदा नहीं। और लोग भी कहें तो फायदा होगा। इसलिए, नशाबन्दी के प्रचार कार्य को व्यापक बनाना चाहिये। **(क्रमशः)**

।। ओ३म्।।

'कैंसर पहचान कारण बचाव'

* इस रोग के विषय में प्रयास मात्र है। सन् 1972 से 2013 तक कुछ रोगियों को सलाह देने का मौका मिला, इन में से खान-पान का ढंग बदलने से कई रोगी सामान्य जीवन जी रहे हैं और दूसरे 18 साल तक जीवन जी कर स्वर्ग सिधारे। आयुर्वेद में भी अपचियों-कर्कट आदि अर्बुदों के लेख हैं। अनुसंधान चल रहे हैं। यह रोग जिस अंग में होता है तब उसी नाम से जाना जाता है। जैसे चर्म कैंसर-मुख कैंसर-स्तन आदि लगभग सभी के कारण व लक्षण मिलते जुलते होते हैं।

* **कारणः-** दूषित वातावरण, मानसिक-ध्वनि व शारीरिकादि जलवायु प्रदूषण, रासायनिक खाद-रासायनिक दवाइयां, नशों का सेवन, पुराना अम्लपित्त (ACIDITY) आमाशय शोथ, पुरानी कड़ी गांठ कभी भी कैंसर में में बदल सकती है। पुराना प्रदर (लिकारिया) गर्भाशय के पुराने घाव, उत्तेजक औषधियों के कारण, रोग प्रतिकार शक्ति की कमी से जिसे अम्यूनिटी कहते हैं। अशुद्ध खान-पान से जिसके रक्त और शरीर में दूषित पदार्थ भरे हों, लम्बे समय तक पेट खराब रहना, अनेक कारणों से शरीर के कोश (CELLS) कमजोर हो जाते हैं। टूटे तन्तु बाहर ना निकलना, नये कम बनना, ग्रन्थियों के कार्य में रुकावट होना-मांसाहार भी साहायक कारण है। बहुत दिनों तक विश्राम ना करना, अत्यन्त तनाव में रहना, बहुत

www.thearyasamaj.org

दिनों तक निद्रा न आने से शरीर में उष्णता बढ़ती है। कोश अधिक टूटते हैं। इस रोग की सब गांठें एक जैसी हों यह जरूरी नहीं। अधिक तनाव और शरीर में उचाटी लगातार बनी रहने से रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

*** पहचान की कठिनाई:-** अब तक इस रोग के असली कारण का पता नहीं लग सका है। इसके होने के कई कारण हैं। यह किसी को एक दम नहीं होती, जब तक पहचान हो यह शरीर में जड़ जमा लेता है। चाहे एक-दो अंगों में दिखे, फैला सारे शरीर में होता है।

* यह रोग हमारी भयंकर लापरवाइयों का नतीजा है। पुराने रोगों की अन्तिम कड़ी है।

*** पहचान:-** इसके मूल को जानने का प्रयत्न करें। **1.** देह में लगातार जलन या उचाटी (IRRITATION), **2.** सुजन के साथ कड़ा होने का क्रम, **3.** घाव हो तेज गति से बढेगा। शरीर व मन का संतुलन बिगड़ने लगता है। बहुत कम रोगियों में बिना पीड़ा के भी चालू रह सकता है।

*** बचाव:-** जितना सम्भव हो हवा-पानी-खान साफ व सुपाच्य हों, विशेष गेहू के पत्तों का रस, या हरि शुद्ध दूब रस 100-200 ग्राम, विचार उत्तम रखें तथा अंकुरित अनाज का लगातार सेवन करें। पेट ठीक रहे, तनाव घटायें, पेट साफ रोग माफ, मुख साफ रहे, कच्ची तरकारियों का सेवन करें, जो खायें चबा-चबा कर ही, भूख-प्यास ना रोकें, दिन में गहरे लम्बे 25-30 सांस लें, नींद गहरी पूरी लें। थकान में व्यायाम ना करें। संयम से रहें, क्रोध से बचें, 3-3 मास में आंतों की तरीके से सफाई करें। उपवास कैसे करने व खोलने की विधि जाने, भोजन समय पर करें। जिसके पास कोई भी अनुभव है, जनता को जागृत करें। जो हम लेते हैं संसार से ही लेते हैं। तुलसी-पुदीना में कैंसर से लड़ने के गुण हैं।

देवीसिंह आयु० चिकित्सक
रजि० नं० 18377-1
H/R CHD पंचकुला
फोन= 9996316318
स्थाई पता:- बुआना-लाखू
तह:- ईसराना (पानीपत)

।। ओ३म्।।

प्रचारयात्रा विवरण

* ध्यान, अध्यापन, शंका समाधान आदि के रूप में वैदिक धर्म प्रचारार्थ 21 जनवरी, 2017 को दुबई पहुंचा। यह मेरी 26 वीं प्रचार यात्रा है। देश-विदेश, जहां कहीं पर भी जाता हूँ, प्राय: सर्वत्र आर्य सज्जनों के द्वारा, (विशेष कर युवक) एक प्रश्न प्रमुखता से उपस्थित किया जाता है कि सत्य, सनातन, ईश्वरीय-धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, आचार-विचार एवं आदर्श परम्पराओं का समाज राष्ट्र विश्व में प्रचार-प्रसार क्यों नहीं हो रहा है ? आज देश में हजारों की संख्या में आर्य समाजें हैं, विद्यालय, गुरुकुल,आश्रम तथा अन्य संस्थान हैं, जिनमें यज्ञ-संध्या-सत्संग, स्वाध्याय, भजन, प्रवचन, कथा, शिविर, समारोह, उत्सव, संगोष्ठी आदि सम्पन्न होते हैं, इन सबसे व्यक्तिगत,

www.thearyasamaj.org

पारिवारिक लाभ तो अवश्य होते हैं, किन्तु समाज, राष्ट्र के अन्य (वैदिक धर्म से अपरिचित) व्यक्तियों को इनसे लाभ नहीं होता है या अतिन्यून होता है। हम आर्यों का सब कुछ श्रेष्ठ, महान्, आदर्श होते हुवे भी हम बढ़ नहीं पा रहे हैं। लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट नहीं हो पा रहे हैं।

* वैदिक धर्म सार्वभौमिक, सर्वकालीन, सर्वजनीन होते हुवे भी हम इसे फैला क्यों नहीं पा रहे हैं? शास्त्रकार ऋषियों ने लिखा है कि ''सत्यमेव जयते नानृतम्'' किन्तु वर्तमान में तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि सत्य, असत्य से पराजित हो रहा है; उत्तम, घटिया से पिछड़ रहा है, आदर्श; अनादर्श से अभिभूत हो रहा है। अहिंसा, सत्य,अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह के सिद्धान्त अब या तो पुस्तकों में ही शोभा दे रहे हैं या फिर मंच पर विद्वानों का प्रवचन का विषय रह गये हैं। सामान्य मनुष्यों की तो यह मानसिकता बन गयी है कि, बिना झठ, छल, कपट,छद्म अन्याय के तो जीवित रहना भी संभव नहीं है। समाज राष्ट्र में यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि कपटी, अन्यायी, शोषक, धूर्त-चालाक, छली व्यक्ति बड़े ठाठ से, सुख सुविधा वाले साधनों के साथ गर्व के साथ जी रहे हैं और सत्यवादी, आदर्श, धर्मपरायण सज्जन लोगों को अनेक प्रकार के अभावों, अन्यायों, अत्याचारों, बाधाओं, कष्टों के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। इस स्थिति के कारण भी जन सामान्य में सत्य, धर्म, आदर्शों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो गई है।

* इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हमारे पास ईश्वर, ज्ञान, सिद्धान्त, कर्म, उपासना, शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, आचार-विचार आदि समस्त विषय का विज्ञान श्रेष्ठ होते हुवे भी इसके प्रचार-प्रसार में जिन साधनों, सुविधाओं, बुद्धि, साहस, बल, पराक्रम, त्याग, तप, लगन, सहनशक्ति, धैर्य, निष्कामता की नितान्त उपेक्षा है, उनका अभाव है, न्यूनता है। मात्र धनैश्वर्य-सुख सुविधाओं के विपुल तथा उत्कृष्ट हो जाने से कोई धनिक नहीं बन जाता, जब तक समाज राष्ट्र के विपन्न जन समुदाय के लिए, उनका त्याग पूर्वक सदुपयोग न करे। बलिष्ठ, वीर्यवान् की संज्ञा, वही प्राप्त करने का अधिकारी है, जो मात्र शक्ति, सौष्ठव, बृहदाकार का आधिक्य ही न रखता हो, बल्कि अपने बल, साहस, पराक्रम, उत्साह, प्रगल्भता का प्रयोग, निर्बल, प्रताड़ित, शोषित, अन्याय से ग्रस्त दुःखित व्यक्तियों की रक्षा के लिए करे। सच्चा विद्वान् वही है जो समाज राष्ट्र में प्रचलित अज्ञान, असत्य, पाखण्ड, अंधविश्वास को नष्ट करने के लिए साहस, निर्भीकता के साथ परम पुरुषार्थ करे, इस कार्य के करते हुवे मृत्यु भी आ जावे तो घबराये नहीं।

* हमें यह बात अच्छी प्रकार से मन में रखनी चाहिए कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना केवल वहां जाकर व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन को श्रेष्ठ, उन्नत, बनाने के

www.thearyasamaj.org

लिए नहीं की है बल्कि इसके माध्यम से न केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व को भी श्रेष्ठ बनाने के लिए की है। साप्ताहिक सत्संग के कार्य तो हम घर पर भी करते हैं, करने चाहिएं। समाजों में तो आर्यसभासदों को समाज, राष्ट्र में से मांसाहार, मद्यमपान, द्यूत, व्यभिचार, नास्तिकता, अंधविश्वास, पाखण्ड, रिश्वत, झूठ, छल, कपट, अन्याय,अत्याचार जैसी बुराइयों को कैसे निर्मूल किया जाये और इसके लिए कौन, कितना, किस प्रकार का तन-मन-धन-समय-बुद्धि का पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, निष्कामतापूर्वक सहयोग करेगा यह सब मिलबैठकर सुनिश्चित करना चाहिए। स्मरण रहे कि सत्य की, धर्म की, आदर्श की जीत स्वत्र: नहीं होती, बल्कि उसे पूर्ण संगठित होकर योजनाबद्ध रूप से, पूर्ण-पुरुषार्थ-घोर तपस्या-आत्मविश्वास तथा ईश्वर की सहायता से जिताया जाता है।

* हे देवाधिदेव महादेव! हम वेदानुयायी, ऋषिभक्त, याज्ञिक, ध्यानी स्वाध्यायशील, आचार्य, प्रचारक, अधिकारी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी संन्यासी सभी आर्यों के समक्ष, ये अधर्मी, विधर्मी, कुधर्मी, दैत्य, पिशाच, असुर, नास्तिक अपने आतंक से समाज-राष्ट्र-विश्व को नरकमय बनाये जा रहे हैं और हम हाथ पर हाथ रखे, मूक बनकर, मात्र मन मसोस कर, इनको निहार रहे हैं। कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। हे अन्तर्यामिन् दयानिधान! वेद ज्ञान को समग्र विश्व में प्रसारित प्रचारित करने हेतु हमें विपुल शक्ति, अदम्य-साहस, अटूट-विश्वास, अचल-पराक्रम, उत्कृष्ट-उत्साह प्रदान करो, जिससे हम मात्र घर या समाज मंदिर में, यज्ञ-संध्या-स्वाध्याय-सत्संग-भजन तक ही सन्तुष्ट न रहें, बल्कि अत्यन्त साहसिक, विशिष्ट क्रान्तिकारी कार्यों का सुसम्पादन करें, यह उद्योग आपके सहाय के बिना असंभव है। हमें पूर्ण विश्वास व आशा है कि आप शीघ्र, अवश्य ही हमारे में वीर्य-ओज-बल प्रदान करके, इन कार्यों के सम्पादन करने में हमें समर्थ बनायेंगे।

ज्ञानेश्वरार्य:

रास अल खेमा U.A.E.

(RAS AL KAHIMAH)

पुस्तक समीक्षा

नाम- शुद्धि आन्दोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी।

लेखक- सन्तोष आर्य, आर्यप्रवक्ता।

प्रकाशक- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)

मूल्य- 80 रुपये, पृष्ठ संख्या 136

आजकल भारत के निर्धन,अछूत समझे जाने वाले लोगों और स्कूल कालेजों में पढने वाली लड़कियां को लोभ-लालच तथा विवाह का झांसा देकर मुसलमान और ईसाई बनाने का प्रयत्न जोर पकड़ रहा है। पूर्वी और दक्षिण भारत में इस प्रकार की दुर्घटनायें अधिक हो रही हैं। यदि यह कार्य इसी भांति बेरोकटोक चलता रहा तो हिन्दुओं की संख्या अल्पमत में आने की पूरी सम्भावना है। क्योंकि धार्मन्तरण के अतिरिक्त

www.thearyasamaj.org

मुसलमान अनेक विवाह करके अधिक से अधिक सन्तान उत्पन्न कर रहे हैं। दूसरी ओर हिन्दुओं में परिवार नियोजन के आधार पर एक-या दो सन्तान पैदा करने की परम्परा चल रही है।

भारत को इस स्थिति से बचाने के लिए आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद्, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, हिन्दू जागरण समिति, बजरंग दल, शिवसेना, शुद्धिसभा आदि अनेक संस्थायें यथासम्भव कार्य कर रही हैं। छत्रपति शिवाजी से लेकर अब तक के इस शुद्धि कार्य की जानकारी प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अति विस्तृत रूप से की है, इसके लिए लेखक बधाई का पात्र है।

आज यदि मूले जाट, रांघड़ राजपूत आदि लोग अपनी-अपनी पंचायतों के माध्यम से अपने पुराने कुल और जाति में वापिस आने के लिए प्रयत्न करें तो शुद्धिकार्य में बहुत बड़ा योगदान होगा। शुद्धि के पश्चात् इनके पुत्र-पुत्रियों के विवाह आदि में बाधा नहीं आनी चाहिये। इसके लिए समाज के सभी लोगों को परस्पर प्रेमभाव से उनको अपनाना चाहिये। यदि विवाह जैसे आवश्यक कार्य शुद्ध होने के बाद भी अपने-अपने क्षेत्र में ही करने पड़ें तो शुद्ध होने का क्या लाभ है ? अतः इस विषय में आत्मीयता से काम लेना चाहिये।

उपर्युक्त अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिये, ऐसी हमारी कामना है।

-विरजानन्द दैवकरणि

1. संस्था समाचार

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का 101 वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

25-26 फरवरी 2016 को गुरुकुल झज्जर का 101 वां वार्षिक महोत्सव अत्यन्त उल्लासपूर्वक सम्पन्न हो गया। इस उत्सव में निम्नलिखित सज्जनों ने पधार कर गुरुकुल का उत्साहवर्धन किया। स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी कर्मपाल जी जींद, स्वामी देवव्रत जी बल्लभगढ, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महेन्द्रगढ, स्वामी ब्रह्मानन्द जी मुजफ्फरनगर, स्वामी सुखानन्द जी गंगानगर, आचार्य हरिदत्त जी लाढौत, डॉ. योगानन्द जी शास्त्री दिल्ली, कवि सारस्वत मोहन मनीषी दिल्ली, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी कुलपति हरद्वार, धर्मपाल जी आर्य दिल्ली, सत्यवीर जी शास्त्री रोहतक, डॉ. बलवीर जी रोहतक, डॉ. आनन्दकुमार जी दिल्ली, सत्यवीर जी शास्त्री रोहतक, डॉ. जगदेव जी रोहतक, डॉ. सुधीर कुमार जी दिल्ली, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी रोहतक, डॉ. जयभारती जी पंचकूला, महावीर जी शास्त्री रोहतक, श्री फतहसिंह जी भण्डारी।

व्यायाम सम्मेलन की अध्यक्षता श्री विजयसिंह मलिक सी.टी.एम. झज्जर ने की। व्यायाम सम्मेलन में श्री चौ. ओम्प्रकाशजी धनखड़ पधारे और अपने उद्बोधन के पश्चात् ग्यारह लाख रुपये अनुदान की घोषणा की। ब्रह्मचारियों ने आसन, दण्ड बैठक, स्तूप,

www.thearyasamaj.org

मल्लखम्भ, जिमनास्टिक, मोगरी, लाठी, भाला, तलवार और कमाण्डो आदि विविध खेलों का प्रदर्शन किया। श्री नरेश शास्त्री ने प्राणायाम के बल पर जीप रोककर अद्भुत प्रदर्शन किया। इस प्रकार के प्रदर्शन से श्री धनखड़ जी अत्यन्त प्रभावित हुए। यह व्यायाम सम्मेलन स्वामी देवव्रत जी के नेतृत्व में स्वामी शुद्धबोध जी करा रहे थे।

यज्ञवेदी पर स्वामी देवव्रत जी और ब्रह्मा डॉ. जगदेव जी के मधुर प्रवचन हुए। वहीं आचार्य विजयपाल जी ने यज्ञ का महत्त्व बताते हुए कहा कि गुरुकुल के प्रत्येक उत्सव पर एक वेद से यज्ञ होता है। चारों वेद एक एक बार पूर्ण होने पर प्रति पांचवें वर्ष चारों वेदों से यज्ञ की परम्परा यहां पिछले 75 वर्षों से लगातार चल रही है।

इस उत्सव में स्वामी ओमानन्द सरस्वती की स्मृति में इस बार भी तीन सम्मान प्रदान किये गये। विद्वत्सम्मान प्राचार्य कुमारी डॉ. सुमेधा जी गुरुकुल चोरीपुरा को, नैष्ठिक ब्रह्मचारी सम्मान आचार्य कुमारी डॉ. सुकामा जी गुरुकुल चोरीपुरा को तथा आर्य भजनोपदेशक सम्मान पं० नरेशदत्त, श्री बिजनौर को प्रदान किया गया। इस सम्मान में प्रत्येक को 15-15 हजार रुपये, शाल, प्रशस्तिपत्र तथा स्मृतिचिह्न दिया गया।

मंच संचालन श्री राजबीर सिंह छिकारा मन्त्री गुरुकुल तथा डॉ. राजकुमार आचार्य झज्जर ने बड़ी योग्यतापूर्वक किया। कवि डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी की कविता से श्रोताओं के हृदय उत्साह से भरकर उछल रहे थे। श्री तेजवीर जी और महाशय नन्दराम आर्य के भजनों को भी श्रोताओं ने बड़े उत्साह और मनोयोग से सुना।

सम्मेलन की समाप्ति पर आचार्य विजयपाल जी ने सभी आगन्तुक सज्जनों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया और कहा कि आप यहां पधारे आपको निवास और भोजन आदि में असुविधा भी हुई होगी, पुनरपि आपने उसे अभिव्यक्त न करके यथाशक्ति और श्रद्धापूर्वक गुरुकुल को दान भी दिया। इसके लिए गुरुकुल परिवार की ओर से आपको हार्दिक धन्यवाद और आप से यह प्रार्थना करता हूं कि भविष्यत् में भी अपनी प्रिय संस्था इस गुरुकुल को इसी प्रकार स्मरण करते रहना।

आगे आचार्य जी ने कहा कि हमारी सरकार संस्कृत भाषा की उपेक्षा कर रही है, यदि सरकार का यही रवैया रहा तो जनता के साथ मिलकर संस्कृत की रक्षा हेतु हमें सत्याग्रह करने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसके लिए जनता में हाथ उठाकर पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की। तदनन्तर शान्तिपाठ के साथ उत्सव समाप्त हुआ।

श्री रामप्रताप जी आर्य ने दान दाताओं से प्राप्त धन को बहुत सावधानी से सम्भाला।

www.thearyasamaj.org

श्री महावीर शास्त्री ने ब्रह्मचारियों को व्यवस्था में रखा। श्री कृष्ण शास्त्री ने पाण्डाल की व्यवस्था संभाली और श्री अशोक शास्त्री तथा श्री नन्दलाल शास्त्री ने भोजनव्यवस्था का गुरुतर भार वहन किया। हजारों दर्शकों ने धर्मलाभ उठाने के साथ-साथ पुरातत्त्व संग्रहालय को देखकर अपने ज्ञान में वृद्धि की। श्री कन्हैयालाल आर्य गुड़गावां ने गुरुकुल की गोशाला हेतु एक गाय दान में दिलाई।

इन सभी सज्जनों को धन्यवाद।

-विरजानन्द दैवकरणि

2. गुरुकुल फतेहपुर पूण्डरी का उद्घाटन आचार्य विजयपाल जी योगार्थी (गुरुकुल झज्जर) ने 21 फरवरी 2016 को किया। आचार्य जी ने उद्घाटन के अवसर पर अधिकारियों को सुझाव दिया कि आप इसका नाम तो गुरुकुल रख रहे हैं; परन्तु आपकी योजना सी.बी.एस.ई. के पाठयक्रम के अनुसार स्कूल चलाने की है। अत: आपको गुरुकुल नाम की सार्थकता के अनुसार आर्षपाठविधि द्वारा शिक्षा देनी चाहिये।

3. गुरुकुल झज्जर के वार्षिक उत्सव हेतु प्रचार रथ के द्वारा श्री ओम्प्रकाश पांचाल द्वारा दस दिन तक आस-पास के ग्रामों में गुरुकुल और आर्यसमाज का प्रचार किया, इस कारण उत्सव में जनता की उपस्थिति भी बहुत अधिक रही।

-सुधारक के संवाददाता द्वारा

शोक सूचना

सभी सज्जनों को दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज यमलार्जुन पर जि० बहराइच (उ०प्र०) के प्रसिद्ध आर्यसमाजी एवं समाजसेवक श्री धर्मदेव जी आर्य का निधन 75 वर्ष की आयु में 20 जनवरी 2017 ई० दिन शुक्रवार को रात्रि 10:30 बजे हो गया। श्री धर्मदेव जी ने आर्य समाज के कार्यो को आगे बढाया। आपके कार्यकाल में विधर्मी (मुस्लिम) भाई भी शुद्ध होकर वैदिक धर्म ग्रहण करते रहे हैं। आप धार्मिक कार्यों में विशेष रुचिपूर्वक भाग लेते थे। अन्तिम संस्कार 29 जनवरी को सायं 4 बजे किया गया। शान्ति यज्ञ 2 फरवरी दिन बृहस्पति वार को दोपहर बाद 1 बजे से 4 बजे तक स्वामी शुद्धबोध सरस्वती मुख्याध्यापक गुरुकुल झज्जर (स्व० श्री धर्मदेव जी के सबसे छोटे भाई) की अध्यक्षता में श्री डॉ० राजेश आर्य, श्री सत्यप्रकाश जी शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। क्षेत्र के सभी नागरिकों ने इस शोक संवेदना में भाग लिया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। विरह वियोग से सन्तप्त परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति दे।

निवेदक

स्वामी शुद्धबोध सरस्वती

मुख्याध्यापक गुरुकुल झज्जर

www.thearyasamaj.org

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (जिला झज्जर) सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निः शुल्क ध्यान योग, आसन, प्राणायाम प्रशिक्षण शिविर

एवम्

अथर्ववेद के 19-20 काण्ड से बृहद् यज्ञ

सोमवार 27 मार्च 2017 से रविवार 02 अप्रैल 2017 तक

सांनिध्यः- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

नोटः- शिविर में महिलाए भी भाग ले सकती हैं। * शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। * भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। * शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संजोजकः

राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195	**दुग्धाहारी सत्यानन्द** प्रधान ट्रस्ट, 9313923155	**आर्य दर्शन कुमार अग्निहोत्री** मन्त्री ट्रस्ट, 9810033799
विक्रमदेव शास्त्री व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062	**श्री कन्हैयालाल आर्य** उपप्रधान ट्रस्ट, 9911197073	**सत्यपाल वत्सार्य** उपमन्त्री ट्रस्ट, 9416055359

हर्ष सूचना

पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए एक स्वर्णिम अवसर

तुरन्त सम्पर्क करके पूर्ण लाभ प्राप्त करें। महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के रेवाड़ी रोड पर स्थित हस्तपताल में स्वामी ओमानन्द सरस्वती योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय प्रारम्भ हो चुका है। रोगी व्यक्ति आकर लाभ उठा रहे हैं। जिन व्यक्तियों के शरीर के किसी भी जोड़ में जैसे-गर्दन, कमर, रीढ़ की हड्डी, घुटने आदि में दर्द हो, पेट खराब हो, अपचन, कब्ज, गैस, भूख नहीं लगती हो, नींद नहीं आती हो, सिर में दर्द बना रहता हो, चक्कर आता हो, गुर्दे सम्बन्धी पीड़ा हो, फोड़े-फुंसियाँ हों या रक्त विकार हो इत्यादि अनेक प्रकार के रोगों का उपचार 36 प्रकार की प्राकृतिक विधि जैसे एनिमा, मिट्टी के लेप, धूप सेवन, तेलमालिश, शुद्ध खानपान आदि के द्वारा सफलतापूर्वक चिक्त्सा की सुविधा उपलब्ध है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करके स्वास्थ्य लाभ उठायें।

-निवेदक-

आचार्य विजयपाल 9416055044	**वैद्य बलराम** 9813458815, 8295301332	**डॉ. आनन्द स्वामी** 8683865100

www.thearyasamaj.org

शोक समाचार

श्री सत्यप्रकाश जी आर्य 'हरिकिशन ओम्प्रकाश फर्म के अध्यक्ष का 9 फरवरी 2017 को अचानक निधन हो गया। वे 77 वर्ष के थे। खारी बावली, नयाबास दिल्ली में इनकी सामग्री, यज्ञपात्र और बादाम रोगन की दुकान थी। आर्यसमाज सीताराम बाजार दिल्ली के प्रधान और मन्त्री पद पर भी सेवा कर चुके थे। स्वामी ओमानन्दजी का इनके परिवार के साथ बहुत पुराना सम्बन्ध था। पहले ये आयुर्वेदिक कच्ची दवाइयों का कार्य करते थे। स्वामी जी सदा इन्हीं से दवाइयां लेते थे। श्री सत्यप्रकाश जी अपने पीछे दो पुत्र तथा पौत्र-पौत्रियाँ से भरा पूरा परिवार छेड़ गये है। गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के वार्षिक यज्ञ में बहुत सहयोग देते रहते थे।

गुरुकुल झज्जर परिवार की ओर से इनके शान्तियज्ञ में भाग दिया गया तथा इनकी आत्मा की सद्गति के लिए तथा पारिवारिक सदस्यों को इस कष्ट को सहन करने को प्रार्थना ईश्वर से की गई। इन्होंने अपना शरीर मैडिकल कालेज के छात्रों के परीक्षणार्थ दान किया हुआ था, अत: इनकी अन्त्येष्टि नहीं की गई। निधन के पश्चात् भी अपनी देह परोपकार हेतु प्रदान कर गये।

-विरजानन्द दैवकरणि

शोक समाचार

गुरुकुल झज्जर में पठित मातनहेल निवासी श्री ओम्प्रकाशजी के सुपुत्र, श्री उमराव सिंह जी के पौत्र श्री कर्मवीर शास्त्री का एक दुर्घटना में निधन हो गया। ये गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल गौतमनगर के स्नातक थे। आर्यसमाज के प्रचारार्थ अमेरिका में भी जाते रहते थे। नांगलोई (दिल्ली) से अपनी गाड़ी से ग्राम मातनहेल (झज्जर) जा रहे थे कि मार्ग में किसी अज्ञात ट्रक वाले ने टक्कर मार दी, इससे कर्मवीर जी अचेत हो गये। तीन दिन तक अचेत अवस्था में रहते हुए राजेन्द्र पैलेस (दिल्ली) के चिकित्सालय में 8-2-2017 को निधन हो गया। इनके फूफा डॉ० बलवीर आचार्य महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में अध्यापन कराते थे तथा इनकी बुआ डॉ० कृष्णा आचार्य संस्कृत विभाग में उक्त विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि 35 वर्षीय सुशील युवक कर्मवीर शास्त्री के आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा परिवार के लोगों को इस इस दु:ख के समय धैर्य प्रदान करें।

-गुरुकुल झज्जर की ओर से

शिविर सूचना

दिनांक 2 अप्रैल से 9 अप्रैल 2017 को वानप्रस्थ साधक आश्रम में "क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन किया गया है। कृपया अपनी सम्मानित पत्रिका में इस सूचना का छपवाने की कृपा करें।

व्यवस्थापक
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर
वानप्रस्थ साधक आश्रम
आर्यवन, रोजह, डा० सागपुर
(साबरकाठा)
गुजरात- 383307
दूरभाष- 9427059550
02770-287417, 291555

www.thearyasamaj.org

डॉ० जयभारती भाषण देते हुए।

डॉ० सुधीर कुमार भाषण देते हुए।

आचार्य हरिदत्त जी भाषण देते हुए।

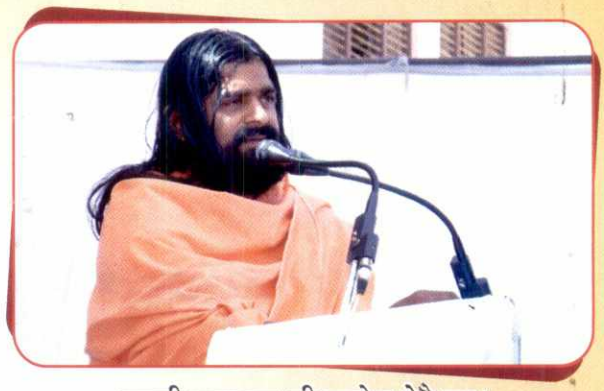

स्वामी ब्रह्मानन्द जी उपदेश देते हुए।

स्वामी सुखानन्द जी उपदेश देते हुए।

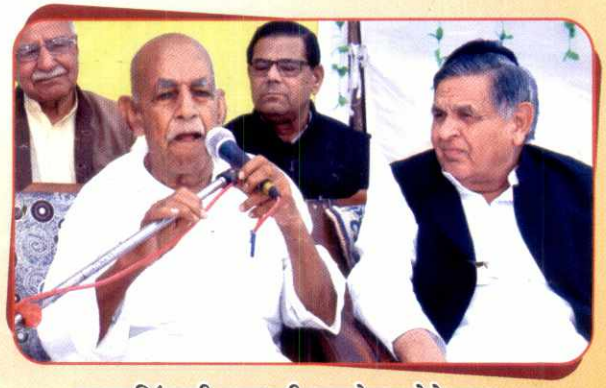

फतहसिंह जी भण्डारी उद्‌बोधन देते हुए।

www.thearyasamaj.org

आचार्या सुकामा जी को सम्मानित करते हुए।

पं० नरेशदत्त जी को सम्मानित करते हुए।

चौ० ओम्प्रकाश धनखड़ कृषिमंत्री भाषण देते हुए।

श्री नरेश शास्त्री बेल तोड़ते हुए।

आग गोले से निकलने का प्रदर्शन करते हुए ब्रह्मचारी।

कमाण्डो का खेल दिखाते हुए ब्रह्मचारी।

विशेष आसन करते हुए ब्रह्मचारी।

स्तूप बनाकर दिखाते हुए ब्रह्मचारी

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री _____

स्था _____

डा० _____

जिला _____

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ,